स्पर्श (भाग-2)
(LITERATURE)

मनुष्यता

–मैथिलीशरण गुप्त

काव्यांश

'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि ने मनुष्य जीवन का अर्थ, महत्व और उसे सार्थक करने का उपाय बताया है। अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में चेतना शक्ति अधिक प्रबल होती है। वह अपना ही नहीं औरों के हिताहित का ख्याल रखने में, सभी के लिए कुछ कर सकने में भी सक्षम होता है। केवल अपने लिए सोचना, अपना पेट भरना पशुओं का जीवन होता है, किंतु मनुष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए। मनुष्य कहलाने के लिए सब के हित में सोचना और कार्य करना आवश्यक है।

वस्तुपरक प्रश्न

[1 अंक]

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

(क) कवि ने कैसे मार्ग पर आगे बढ़ने की बात कही है?
- (i) अपनी इच्छा से चुना हुआ मार्ग
- (ii) भाग्य से मिला हुआ मार्ग
- (iii) सुख-सुविधाओं से भरा हुआ मार्ग
- (iv) चुनौतियों से भरा हुआ मार्ग

(ख) जीवन मार्ग पर आगे बढ़ते हुए हमें किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
- (i) आपसी मेलजोल न बढ़े
- (ii) भिन्नताएँ न घटें
- (iii) मनमुटाव होता रहे
- (iv) मेलजोल बढ़ता रहे

(ग) इस काव्यांश का संदेश क्या नहीं है ?
- (i) विघ्न-बाधाओं से घबराना नहीं चाहिए
- (ii) सचेत होकर आगे बढ़ना चाहिए
- (iii) अपने हित को सर्वोपरि रखना चाहिए
- (iv) द्वेष भाव बढ़ना नहीं चाहिए

(घ) इस काव्यांश के कवि और कविता का नाम क्या है?
- (i) मनुष्यता- सुमित्रानंदन पंत
- (ii) कर चले हम फ़िदा - सुमित्रानंदन पंत
- (iii) मनुष्यता - मैथिलीशरण गुप्त
- (iv) मनुष्यता - रवींद्रनाथ ठाकुर

उत्तर : (क) *(i) अपनी इच्छा से चुना हुआ मार्ग*

व्याख्यात्मक हल : कवि ने हमें सच्चा मनुष्य बनने का उपाय बताया है और अब वे चाहते हैं कि हम अपनी इच्छा से एक उचित मार्ग का चुनाव करें।

(ख) *(iv) मेलजोल बढ़ता रहे*

व्याख्यात्मक हल : हमारा जीवन सरल और सफल तभी बनेगा, जब हमारा आपसी मेलजोल बढ़ता रहेगा।

(ग) *(iii) अपने हित को सर्वोपरि रखना चाहिए*

व्याख्यात्मक हल : सच्चा मनुष्य कभी भी अपने हित को सर्वोपरि नहीं रख सकता।

2. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही ।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

(क) धरती से कौन-सा गुण लेने की बात कही गई है?
- (i) गुरुत्वाकर्षण का गुण
- (ii) सहानुभूति का गुण
- (iii) स्वार्थपरकता का गुण
- (iv) स्वयं को महान सिद्ध करने का गुण

(ख) दया के प्रवाह में क्या बह गया ?
- (i) महात्मा बुद्ध के संदेश
- (ii) दया और करुणा के भाव
- (iii) महात्मा बुद्ध के अनुयायी
- (iv) महात्मा बुद्ध का विरोध

(ग) इस काव्यांश में किसका महत्व बताया गया है?
- (i) धरती का
- (ii) महात्मा बुद्ध का
- (iii) परोपकार के भाव का
- (iv) मनुष्य जीवन का

(घ) विरुद्धवाद का तात्पर्य क्या है?
- (i) विरोधी
- (ii) सहानुभूति का गुण
- (iii) महात्मा बुद्ध का विरोध
- (iv) परोपकार के भाव का

उत्तर : (क) *(ii) सहानुभूति का गुण*

व्याख्यात्मक हल : धरती इतनी विशाल होते हुए भी सबकी जरूरतें पूरी करने के लिए वशीकृता बनी हुई है। उससे हमें सहानुभूति की सीख लेनी चाहिए।

(ख) *(iv) महात्मा बुद्ध का विरोध*

(ग) *(iii) परोपकार के भाव का*

व्याख्यात्मक हल : परोपकार का भाव ही है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है।

(घ) *(iii) महात्मा बुद्ध का विरोध*

व्याख्यात्मक हल : उस समय की सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ महात्मा बुद्ध ने दया और परोपकार का संदेश दिया था जिसका खूब विरोध हुआ था। उसे ही विरुद्धवाद कहा गया है।

3. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(क) कवि ने किसे उदार माना है?

(i) जो समस्त विश्व को ज्ञान देता है
(ii) जो समस्त विश्व में भ्रमण करता है
(iii) जो समस्त विश्व को एक सूत्र में बाँध देता है
(iv) जो असीम शक्तिशाली होता है

(ख) काव्यांश अनुसार धरा किसे जन्म देकर धन्य हो जाती है?

(i) सरस्वती जिसका वर्णन करती है
(ii) जो पूरे विश्व में अपनापन व्याप्त कर देता है
(iii) चारों ओर जिसकी कीर्ति गूँजती है
(iv) जिसे समस्त सृष्टि पूजती है

(ग) इस काव्यांश के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि—

(i) हमें संपूर्ण विश्व के लिए आत्मीयता का भाव रखना चाहिए
(ii) हमें प्रसिद्ध होने के लिए कार्य करना चाहिए
(iii) हमें स्वार्थी जीवन जीना चाहिए
(iv) हमें सृष्टि की पूजा करनी चाहिए

(घ) काव्यांश अनुसार उदार व्यक्ति की पूजा कहाँ होती है?

(i) पुस्तकों में **(ii) संपूर्ण सृष्टि में**
(iii) गीतों में **(iv) इतिहास के पन्नों में**

उत्तर : (क) *(iii) जो समस्त विश्व को एक सूत्र में बाँध देता है*

व्याख्यात्मक हल : समस्त मानव जाति को एक सूत्र में बाँधना ही सबसे उदार कार्य है।

(ख) *(ii) जो पूरे विश्व में अपनापन व्याप्त कर देता है।*

व्याख्यात्मक हल : धरती का वह अंश या देश ऐसे उदार लोगों की वजह से ही जाना जाता है।

(घ) *(ii) संपूर्ण सृष्टि में*

4. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीज ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे ?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(क) दधीचि ऋषि ने क्या दान किया था?

(i) भोजन का थाल
(ii) शरीर का मांस
(iii) अपना अस्थि जाल
(iv) अपना कवच

(ख) करण ने अपना शरीर चर्म कैसे दान किया था?

(i) घबराते हुए **(ii) हँसते हुए**
(iii) रोते हुए **(iv) काँपते हुए**

(ग) नश्वर कौन है?

(i) हमारी आत्मा **(ii) हमारा शरीर**
(iii) हमारे विचार **(iv) हमारे कर्म**

(घ) प्रस्तुत काव्यांश का संदेश है कि हमें—

(i) सबके प्रति दया भाव रखना चाहिए
(ii) अपने शरीर को सुंदर बनाना चाहिए
(iii) बिना सोचे-समझे दान नहीं करना चाहिए
(iv) दान करने में संकोच नहीं करना चाहिए

उत्तर : (क) *(iii) अपना अस्थिजाल*

(ख) *(ii) हँसते हुए*

(ग) *(ii) हमारा शरीर*

व्याख्यात्मक हल : हमारा शरीर हर दिन परिवर्तित होता है और एक न एक दिन इसका अंत निश्चित है। इसलिए यह नश्वर अर्थात् नाशवान है।

(घ) *(iv) दान करने में संकोच नहीं करना चाहिए*

व्याख्यात्मक हल : दान करने से वह आत्मा शुद्ध होती है, जो कि शाश्वत है। शरीर, जिसे नष्ट होना ही है, उसका दान करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

5. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

(क) परस्परावलंब का अर्थ है—
- (i) एक-दूसरे का सहारा बनना
- (ii) एक-दूसरे के लिए बाधा बनना
- (iii) एक-दूसरे के काम में विलंब पैदा करना
- (iv) खुद अपना सहारा बनना

(ख) जीवन में आगे कैसे बढ़ा जा सकता है?
- (i) ईश्वर की दया से
- (ii) अपने स्वार्थ को पूरा करके
- (iii) एक-दूसरे का सहारा बनकर
- (iv) दूसरे का सहारा छीनकर

(ग) 'अमर्त्य अंक' किसे कहा गया है?
- (i) ईश्वर की गोद
- (ii) माँ की गोद
- (iii) पिता की गोद
- (iv) मौत की गोद

(घ) कैसे जीने की प्रेरणा दी गई है?
- (i) केवल अपने लिए
- (ii) केवल दूसरों के लिए
- (iii) अपने और सबके लिए
- (iv) मृत्यु को भूलकर

उत्तर : (क) *(i) एक-दूसरे का सहारा बनना*

(ख) *(iii) एक-दूसरे का सहारा बनकर*

व्याख्यात्मक हल : एक-दूसरे के हित में ही हमारा हित छुपा हुआ है।

(घ) *(iii) अपने और सबके लिए*

व्याख्यात्मक हल : अपने साथ-साथ सबके हित में सोचना और कार्य करना ही मनुष्य की पहचान है।

वर्णनात्मक प्रश्न

[2 - 5 अंक]

लघु उत्तरीय प्रश्न (25 – 30 शब्द)

[2 अंक]

6. 'मनुष्यता' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि पशु प्रवृत्ति किसे कहा गया है और मनुष्य किसे माना है? **[CBSE 2013, 11]**

उत्तर : पशु प्रवृत्ति का शाब्दिक अर्थ है—पशुओं जैसा स्वभाव। प्रस्तुत कविता में पशु प्रवृत्ति मनुष्य के उस व्यवहार को कहा है जब वह केवल अपने बारे में सोचता है। अपना पेट भरना, खाना- सोना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लेता है। पशु-पक्षियों की अपेक्षा बौद्धिक क्षमताएँ अधिक होने पर भी यदि वह सबके हिताहित कार्य नहीं करता तो मानो वह पशु प्रवृत्ति में ही जीवन व्यतीत कर रहा है।

7. कवि मैथिलीशरण गुप्त ने गर्व रहित जीवन बिताने के लिए क्या तर्क दिए हैं? **[CBSE 2015]**

उत्तर : कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' ने इस बात पर जोर दिया है कि हमें गर्व रहित जीवन जीना चाहिए। हमें धनजैसी छोटी चीज के नशे में अंधा नहीं हो जाना चाहिए। अपने आप को सनाथ पाकर भी अपने पर घमंड करना व्यर्थ है क्योंकि अनाथ संसार में कोई है ही नहीं। तीनों लोकों के स्वामी, परमपिता परमेश्वर का सहारा सभी के साथ है। उनके होते हुए कोई भी अकेला या बेसहारा हो ही नहीं सकता। इसलिए किसी भी बात पर अभिमान करना हमारी मूर्खता है।

8. इतिहास में कैसे व्यक्तियों की चर्चा होती है और क्यों? 'मनुष्यता' कविता के आधार पर लिखिए। **[CBSE 2013]**

उत्तर : मनुष्य रूप में जन्म लेकर जो लोग सभी के भले के बारे में सोचते हैं, किसी को कष्ट पहुँचाना बुरा समझते हैं, दूसरों की मदद के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हो जाते हैं; इतिहास में ऐसे ही लोगों की चर्चा होती है। ऋषि दधीचि, राजा रंतिदेव, राजा क्षितीश और दानवीर कर्ण कुछ ऐसे ही महान लोगों के उदाहरण हैं जिन्होंने अपने नश्वर शरीर को सभी के हित में प्रयोग करने में कभी संकोच नहीं किया।

9. 'मनुष्यता' कविता में जीवन को सार्थक बनाने के लिए किस बात पर जोर दिया गया है? **[Diksha]**

उत्तर : कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता के अंतर्गत हमारे समक्ष वह महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किए हैं जो हमें अपने जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा देते हैं। कवि ने पशु प्रवृत्ति से ऊपर उठकर महान जीवन जीने, उदारता को अपनाने, दानवीर बनने और सहानुभूति का महान गुण

अपने अंदर विकसित करने पर जोर दिया है। इन मानवीय गुणों के सहारे ही हम अपने मनुष्य जीवन को सफल बना सकते हैं।

10. ⓐ'मनुष्यता' कविता में वर्णित नैतिक मूल्यों का वर्णन कीजिए।

11. **महात्मा बुद्ध का विरुद्धवाद क्या है?**

उत्तर : महात्मा बुद्ध ने जब अवतार लिया था तब हमारा भारतीय समाज अनेक संकीर्ण मान्यताओं से घिरा हुआ था। महात्मा बुद्ध ने तत्कालीन समाज विरोधी मान्यताओं का विरोध किया और दया, करुणा, परोपकार जैसे महान मूल्यों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सभी को उन्हें अपनाने का संदेश दिया। बुद्ध के यही विचार समाज के लिए विरुद्धवाद थे। समाज के कुछ तत्वों द्वारा किया गया उनका विरोध ही विरुद्धवाद था पर वह उनकी दया और करुणा के आगे टिक नहीं सका।

12. **धरती और महात्मा बुद्ध के उदाहरण किस संदर्भ में दिए गए हैं?**

उत्तर : कवि ने अनेक मानवीय गुणों को मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक बताया है। जिनमें से सहानुभूति और परोपकार का गुण प्रमुख है। धरती इतनी विशाल होते हुए भी सबकी जरूरतें पूरी करने के लिए वशीकृता बनी हुई है। उससे हमें सहानुभूति की सीख लेनी चाहिए और महात्मा बुद्ध ने जिस प्रकार अपनी दया और करुणा से तत्कालीन समाज के विरोध को मिटा दिया, उनसे हमें करुणा और परोपकार की सीख मिलती है।

13. **पशु प्रवृत्ति से आप क्या समझते हैं? कविता में इसका जिक्र क्यों किया गया है?**

उत्तर : मनुष्य तथा अन्य जीव धारियों में मुख्य अंतर यह है कि मनुष्य की सोचने-समझने और निर्णय लेने की शक्ति अधिक प्रबल होती है। इसके बल पर वह अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर संपूर्ण समाज और विश्व के हित-अहित का ख्याल कर सकता है। यदि मनुष्य रूप में जन्म लेकर भी वह सबके काम नहीं आ सकता तो यह पशु प्रवृत्ति ही है।

14. ⓐघमंड करना मनुष्य जीवन की सफलता में कैसे बाधा बन सकता है? स्पष्ट कीजिए।

15. **कविता में ईश्वर के प्रति कवि का विश्वास कैसे झलक रहा है?**

उत्तर : कवि ने किसी भी परिस्थिति में धैर्य न खोने की और घमंड के नशे में चूर होने से बचने की सलाह दी है क्योंकि उनका विश्वास है कि ईश्वर सब जगह और सबके साथ है। उनका सहारा सभी को मिला हुआ है। उनके होते हुए कोई भी अकेला या बेसहारा नहीं हो सकता। वह संपूर्ण प्रकृति के रूप में हमारी सहायता के लिए अपनी बड़ी-बड़ी बाँहें फैलाए खड़े हैं। यदि उनके होते हुए भी कोई अपने आपको बेसहारा महसूस करता है तो वह अत्यधिक भाग्यहीन है।

16. **कविता में कवि ने मनुष्य जीवन के महत्वपूर्ण उद्देश्य की व्याख्या करते हुए क्या कहा है?**

उत्तर : कवि ने कहा है कि आपसी सहयोग से उन्नति की ओर बढ़ना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। यदि हम केवल स्वार्थपूर्ण होकर अपने ही बारे में सोचेंगे, तो देश और समाज उन्नति नहीं कर पाएगा। इसी कारण कवि गुप्त जी ने परोपकार को जीवन का उद्देश्य और सहानुभूति को महाविभूति कहा है। उनकी दृष्टि में जो सारे संसार को अपने जैसा मानता है अर्थात् सबके प्रति आत्मभाव रखता है, वही संसार में चिरस्मरणीय कहलाता है। कवि ने देश के उन महान मानवों को याद किया है, जिन्होंने औरों के लिए बड़े-बड़े त्याग किए और मनुष्यता को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की। उनकी दृष्टि में मनुष्य कहलाने का अधिकारी वही है, जो मानवता के मूल्यों का पालन करता हो।

निबंधात्मक प्रश्न (60–70 / 80–100 शब्द)
[4 एवं 5 अंक]

17. **'मनुष्यता' कविता में कवि ने किन महान व्यक्तियों का उदाहरण दिया है और उनके माध्यम से क्या संदेश देना चाहा है?** **[CBSE 2016]**

उत्तर : कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से मनुष्य जीवन का महत्व और उसका अर्थ तो बताया ही है साथ ही हमें उसे सफल बनाने का मार्ग भी दिखाया है। नैतिक मूल्यों और मानवीय गुणों को अपनाने पर बल देने के लिए कुछ पौराणिक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। राजा रंतिदेव, दधीचि ऋषि, राज क्षितीश और दानवीर कर्ण का उदाहरण देकर हमें दानवीरता के गुण को अपनाने की सीख दी है क्योंकि शरीर जो कि नश्वर है उसके उचित प्रयोग से हमें पीछे नहीं हटना चाहिए और सबके काम आते हुए अपने जीवन, अपनी आत्मा को महान बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। महात्मा बुद्ध का उदाहरण देकर उन्होंने दया, करुणा और परोपकार को सर्वोपरि माना है।

इस प्रकार इतिहास के यह उदाहरण हमारा मार्गदर्शन करने के लिए और अपने मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने की प्रेरणा देने के लिए पर्याप्त हैं।

⚠ **एहतियात**

➡ *यदि यह प्रश्न दो अंक में आता है तो सभी दानवीरों के नाम और उन्होंने क्या दान किया, उसके बारे में लिखना ही पर्याप्त है। यदि चार अंक में आता है तो सभी के नामों के साथ-साथ उनके द्वारा किए गए महान कार्यों का विस्तृत वर्णन करना अनिवार्य है।*

18. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि ने किन गुणों को अपनाने का संकेत दिया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [CBSE 2015]

उत्तर : धरती पर अनगिनत प्रकार के जीव हैं। उनमें से मनुष्य को ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उसका बुद्धि, बल, उसका विवेक, निर्णय लेने की शक्ति उसे सर्वोपरि बनाती है। कवि का मानना है कि केवल मनुष्य के रूप में जन्म लेने से कोई मनुष्य नहीं कहला सकता। उसके अंदर कुछ मानवीय गुणों का होना आवश्यक है। पशु प्रवृत्ति से ऊपर उठकर उसे सभी की मदद करने, सभी के सुख-दुख में शामिल होने का प्रयास करना चाहिए। उसके अंदर सहानुभूति का गुण होना चाहिए तभी वह अपने साथ-साथ दूसरों के कष्ट दूर करने की कोशिश कर पाएगा। दया, करुणा और परोपकार जैसे गुण ही उसकी आत्मा को महान बना सकते हैं। ईश्वर में विश्वास रखते हुए एक उचित मार्ग पर चलते हुए सबके साथ मेलजोल बनाकर रखना चाहिए। जीवन मार्ग में चाहे कितनी भी विघ्न-बाधाएँ आएँ, साहस से उनका सामना करना चाहिए। इन्हीं सब गुणों से मनुष्य जीवन सार्थक हो सकता है।

19. 'मनुष्यता' कविता का प्रतिपाद्य संक्षेप में लिखिए। [CBSE 2014, 12, 11, Delhi Gov. 2021]

उत्तर : कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता के अंतर्गत मनुष्य जीवन का महत्व, उसका सदुपयोग करने के उपाय तथा उन मानवीय गुणों पर प्रकाश डाला है जो एक मनुष्य जीवन को सार्थक बनाते हैं। कवि के अनुसार स्वार्थ से ऊपर उठकर हमें एक महान जीवन जीना चाहिए। तभी हम सुमृत्यु को प्राप्त कर सकते हैं। हमें उदारता का गुण अपनाना चाहिए। किसी भी प्रकार का दान देने में अर्थात् सहायता करने में संकोच नहीं करना चाहिए। मनुष्य के अंदर सहानुभूति, दया और करुणा का जो भाव है वही उसे अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है। परमपिता परमात्मा पर विश्वास रखते हुए हमें एक-दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ना चाहिए। विवेकपूर्वक एक उचित मार्ग का चुनाव करके जीवन-पथ पर मेलजोल के साथ आगे बढ़ना चाहिए। सभी के हित चिंतन में ही हमारा हित छुपा है। मनुष्य ही वह है जो प्राणीमात्र के लिए अपना जीवन व्यतीत करे।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिन भौतिक वस्तुओं से उसका जीवन चलता है उनके उत्पादन में भी बहुत से लोगों का योगदान होता है। कहीं न कहीं हम सभी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक के हित में सभी का हित समाया है।

20. 'मनुष्यता' कविता में परोपकार के संबंध में दिए गए उदाहरण को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि आपका मित्र परोपकारी है यह आपने कैसे जाना? [CBSE 2020]

उत्तर : कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' ने परोपकार को मनुष्य जीवन का एक महत्वपूर्ण गुण बताया है। परोपकार का अर्थ है- दूसरों का उपकार या भला करना। सभी के दुख-सुख को समझते हुए सभी के हित में कार्य करना। कवि ने परोपकार का महत्व बताने के लिए इतिहास के कुछ दानवीरों के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। राजा रंतिदेव ने अपने हाथ में लिया हुआ भोजन का थाल भी दूसरे की क्षुधा को तृप्त करने के लिए दान कर दिया था। दधीचि ऋषि ने देवताओं का साथ देने के लिए अपनी अस्थियाँ तक दान कर दीं थीं। राजा क्षितीज ने एक पक्षी की जान बचाने के लिए अपने शरीर का मांस दान कर दिया था और वीर कर्ण ने अपना सुरक्षा कवच खुशी-खुशी दान में दे दिया था। इन सब दानवीरों का उद्देश्य दूसरों का हित करना ही था।

मेरा भी एक मित्र है जो किसी को तकलीफ में नहीं देख सकता। चाहे कोई छोटा-सा पक्षी हो या कोई इंसान, अगर वह मुश्किल में है तो मेरा मित्र किसी भी हद तक जाकर उसकी मदद अवश्य करता है। मुझे गर्व है कि मेरा मित्र बहुत ही परोपकारी है।

⚠ **एहतियात**

➡ *किसी भी रूप में किसी की मदद करना परोपकार ही है। वह मदद तन, मन या धन किसी भी माध्यम से हो सकती है।*

21. 'मनुष्यता' कविता में कवि किन-किन मानवीय गुणों का वर्णन करता है? आप इन गुणों को क्यों आवश्यक समझते हैं? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

उत्तर : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज से अलग होकर जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। समाज में रहते हुए उसे अपनी बहुत-सी जिम्मेदारियाँ निभानी होती हैं। अपने व्यवहार में ऐसे गुण विकसित करने होते हैं कि वह सबके साथ मेलजोल रख सके और अच्छे संबंध बना सके। इसके लिए कुछ मानवीय गुण हमारे व्यवहार में होने जरूरी हैं। दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति आदि ऐसी विशेषताएँ हैं जो हमें मनुष्य कहलाने के योग्य बनाती हैं। अपना पेट भरने, खाने, सोने का काम तो पशु-पक्षी भी करते हैं। यदि मनुष्य भी ऐसा ही जीवन जीता है, तो उसमें और अन्य जीवो में कोई अंतर नहीं है। किंतु मनुष्य का बुद्धि-बल अन्य जीवधारियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। उसे अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करते हुए सभी के हित में जीवन व्यतीत करना चाहिए। यही एक सच्चे मनुष्य की पहचान है।

22. 'मनुष्यता' कविता से हमें जीवन की सीख मिलती है। कैसे? 80 से 100 शब्दों में स्पष्ट कीजिए। [CBSE Sample Paper 2020]

23. 'मनुष्यता' कविता में कवि ने सब को एक साथ होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है? इससे समाज को क्या लाभ हो सकता है? स्पष्ट कीजिए।

[CBSE 2019, 17]

उत्तर : धरती पर विभिन्न प्रकार के जीव विद्यमान हैं। सब अलग-अलग प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जिन्होंने मनुष्य रूप में जन्म लिया है उनके भी जीवन में भिन्नता देखने को मिलती है। किंतु यह भेद केवल बाह्य है। सबके अंदर एक ही आत्मा विद्यमान है। हम सबको जन्म देने वाले परमपिता परमात्मा एक ही हैं और इस दृष्टि से हम सब एक-दूसरे के भाई-बंधु हैं। हमें बिना किसी मतभेद के, जीवन-मार्ग पर मिलजुल कर आगे बढ़ते जाना चाहिए। जो भी विपत्तियाँ, विघ्न-बाधाएँ राह में आएँ, उन्हें हँसते-हँसते स्वीकार करना चाहिए। किसी के मार्ग में रुकावट न बनकर सभी को सहयोग देना चाहिए क्योंकि समाज में रहते हुए यदि हम एक-दूसरे के विरोध में खड़े होंगे तो उसमें सभी का अहित होगा। जबकि एक होकर चलने से, सबको सहयोग देने से सबके साथ-साथ हमारा भी भला ही होगा। एक समाज ही नहीं संपूर्ण विश्व का हर जीव किसी न किसी रूप में एक-दूसरे से जुड़ा है। अत: एक का नुकसान सब का नुकसान है और एक का फायदा सभी का फायदा है। यही भाव रखते हुए हमें एक सार्थक जीवन का निर्वाह करना चाहिए।

24. 'मनुष्यता' कविता और 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ का केंद्रीय भाव एक ही है। सिद्ध कीजिए।

उत्तर : 'मैथिलीशरण गुप्त' द्वारा रचित कविता 'मनुष्यता' के अंतर्गत उन गुणों की चर्चा की गई है जो हमारे मनुष्य जीवन को सार्थक कर सकते हैं। कवि का मानना है कि केवल मनुष्य के रूप में जन्म लेने से हम मनुष्य नहीं कहला सकते। हमारे अंदर करुणा, दया, परोपकार सहानुभूति जैसे गुणों का होना आवश्यक है। यही संदेश लेखक 'निदा फ़ाज़ली' द्वारा 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के अंतर्गत दिया गया है। लेखक के अनुसार जब हम इन गुणों से वंचित होते हैं तभी हमारे निजी जीवन में और आसपास के वातावरण में इसके दुष्प्रभाव दिखाई देने लगते हैं। आज प्रकृति, अन्य जीव-जंतुओं यहाँ तक कि मानव के प्रति हमारी निष्ठुरता और असंवेदनशीलता का ही परिणाम है कि हम एक-दूसरे से बहुत दूर हो गए हैं, पर्यावरण अत्यधिक प्रदूषित हो गया है। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए प्रकृति या अन्य जीवों को कष्ट पहुँचाना हम बिल्कुल भी बुरा नहीं समझते हैं। यदि हम 'मनुष्यता' कविता के संदेश को ग्रहण कर सकें तो 'अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में जिस प्राकृतिक असंतुलन और उसके कारणों तथा दुष्परिणामों का वर्णन किया गया है, वह समाप्त हो जाएगा और यह धरती फिर से स्वर्ग का रूप धारण कर लेगी।

⚠ **एहतियात**

➡ *जब किन्हीं दो पाठों पर आधारित प्रश्न आए तो दोनों से संबंधित महत्वपूर्ण अंशों का उल्लेख करते हुए अपनी बात को सिद्ध करना है।*